हिन्दी साहित्य को महिला लेखिकाओं का योगदान

(उपन्यासों के विशेष संधर्ब में)

K. Sailaja

Lecturer in Hindi, Sir C R R (A) College, Eluru

Received: Jan. 2020 Accepted: Feb. 2020 Published: Feb. 2020

किसी भी साहित्य का इतिहास देखने से यह ज्ञात होता हैं कि साहित्य के विकास में पुरुषों के समान ही स्त्रियों का भी योग रहा है । संस्कृत साहित्य के विकास में अनेक महिलाओं ने योगदान किया है । इसी प्रकार उर्दू, अंग्रेजी आदि सभी साहित्यों के विकासों में उन्होंने यथोचित हाथ बंटाया है । अनेक महिलाएँ ऋषियों की कोटि को प्राप्त कर सकीं तथा उन लोगों ने मंत्रों की रचना भी की । हिन्दी साहित्य के प्राम्भिक विकास में तो स्त्रियों का योग उतना नहीं ज्ञात होता पर भक्ति साहित्य में वे बराबर साहित्य की श्री - वृध्दि में योग देती रही है । इस दृष्टि से मीरा, सेहजोबाई, सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा आदि अनेक महिलाओं का नाम लिया जा सकता है ।

भारतीय समाज में महिलाओं का महत्वपूर्ण स्थान रहा है । श्रध्दा, करुणा, दया, ममता, स्नेह आदि सभी ऊँचे गुणों का विकास महिलाओं में अधिक रखता है । महिलाओं में हृदय की रागात्मक वृतियों की प्रबलता रहती है ।

वर्तमान हिन्दी साहित्य की सेवा में सुमित्रा कुमारी सिन्हा, विद्यावती कोकिल, विद्यावती मिश्र, तारा पाण्डेय, शकुन्तला आदि अनेक महिलाएँ लगी हुई है । इन देवियों के लेखन - कला तथा कविताओं में हिन्दी साहित्य का कोष निरन्तर भर रहा है । वर्तमान युग में यह सामान्य धारणा बनती जा रही है कि स्त्रियाँ पठन-पाठन में पुरुषों से अधिक सफल हो रही है ।

हिन्दी साहित्य का क्षेत्र व्यापक है । इसका सम्बन्ध जीवन के विभिन्न अंगो से है । आज जब स्त्रियों का समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने की क्षमता बटोर रहा है तो साहित्य के क्षेत्र में उनका आना अच्छा ही है । साहित्य क्षेत्र में आने से वे आपने को ठीक ढ़ंग से समझेंगी तथा उनके द्वारा जिस साहित्य का निर्माण होगा वह अधिक व्यावहारिक तथा उपयोगी होगा । इस तरह हम देखते हैं कि हिन्दी साहित्य विकास में महिलाओं का योग पहले तो कम रहा है, पर अब उत्तरोत्तर बढता जा रहा है और यह साहित्य निर्माण की दिशा में शुभसंकेत है।

प्रेसचंद ने हिन्दी में मौलिक उपन्यास लिखकर उपन्यास दिशा बदल दी । इतना ही नहीं उलते प्रेरणा पाकर अनेक अन्य उपन्यासकारों ने कई उपन्यास लिखे । इसलिए प्रेमचंद के नाम पर इस युग का नामकरण हुआ । आप उपन्यास सम्राट के नाम से प्रसिध्द है । आपने कई

सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया । वे ही पहले कलाकार है, जिन्होंने गरीबों कृषकों, पददलितों और शोषकों को अपने साहित्य में स्थान दिया । कथा साहित्य में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को जन्म दिया । इस युग के अन्य उपन्यासकारों में जयशंकर प्रसाद, विश्वंभर नाथ शर्मा 'कौशिक', पांडेय बेचन शर्मा उग्र, प्रतापनारायण श्रीवास्तव, आचार्य चतुरसेन शास्त्री आदि प्रमुख है । इस युग के महान उपन्यासों में, गोदान, सेवा सदन, तितली, माँ, विजय आदि प्रमुख है ।

आधुनिक काल :-

आधुकि काल में हिन्दी उपन्यासों की अनेक रूपों में रचना की गई इस काल के उपन्यासों में प्रेमचंद की परंपरा के उपन्यास, सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास, आंचलिक उपन्यास, ऐतिहासिक उपन्यास, मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास व्यंग्य उपन्यास, आदि दिखाई देते है । इस युग में भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, अज्ञेय, नागर्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, यशपाल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, जैनेंद्र कुमार, कमलेश्वर आदि कई प्रमुख उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों से हिन्दी उपन्यास भंडार को समृध्द किया । इस आधुकि काल की और एक विशेषता यह है कि इस युग में उपन्यास के क्षेत्र में महीला उपन्यासकारों का पदार्पण हुआ ।

वास्तव में हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में महिलाओं का पदार्पण १८९० में ही हुआ । १८९० में एक अनाम लेखिक का उपन्यास ''सुहासिनी'' प्राकाशित हुआ । इस के बाद प्रियंवदा देवी की 'लक्ष्मी' १९०८ में, गोपालदेवी का ''लक्ष्मी बहु'' १९१२ में, भगवान देवी का साँदर्य कुमारी १९१४ ई में प्रकाशित हुए ।

वास्तव में हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में महिलाओं का पदार्पण १८९० में ही हुआ । १८९० में एक अनाम लेखिक का उपन्यास ''सुहासिनी'' प्राकाशित हुआ । इस के बाद प्रियंवदा देवी की 'लक्ष्मी' १९०८ में, गोपालदेवी का ''लक्ष्मी बहु'' १९१२ में, भगवान देवी का साँदर्य कुमारी १९१४ ई में प्रकाशित हुए ।

महिलाओं की साहित्य रचना की श्रृंखला बध्द शुरु आत १९२२ ई.से. हुई । हिन्दी कथा साहित्य को निरंतर विकासशील परंपरा के अनेक नए मोडों पर नारी पात्रों ने विभिन्न भूमिकाओं का निर्वाह किया । कुंठाओं, कमजोरियों,प्रताड़नाओं, अंध विकासों, रूढियों, परंपराओं और अत्याचारों के बीच में से उभर कर यथार्थ परिस्थितियों में केंद्रिभूत हो गई।

स्वातंत्र्योत्तर साहित्य में नारी का दृष्टिकोण और उसके प्रति दृष्टि कोण दोनों बदल गये । नारी के संबंध बदल गये । आधुनिक नारी के संबंध में सुप्रसिध्द कथाकार कमलेश्वर जी का कहना है कि - आधुनिक नारी अब अपनी पूरी गरिमा, देह, संपदा और वास्तविक सम्मान से साथ आयी है .... बहुत-सी कहानियों उपन्यासों की नारियाँ नितांत प्रामाणिक संदर्भो और जीवन प्रसंगों से जुडी हूई है, जो पुरुष के माध्यम से जीवन - मूल्यों या उसके अर्थों की खोज

में दृप्त नहीं, वे उपने पूर्ण व्यक्तित्व के साथ सहयोगी जीवन, पद्धति की भागी दार हैं या स्वयं जिम्मेदार । सेक्स अब पाप बोध देने वाली किया नहीं, एक वास्तविक और अनिवार्य आवश्यकता के रूप में समाहित है । .... अब संबंधों के दो ध्रुव है - स्त्री और पुरुष - जो सारी संगतियों से सीधे संबद्ध है । --- धोखा धडी, बलात्कार या दीदीवादी - भाभी वादी विकृत परंपरा का मानसिक अत्याचार अब, लेखनीय सहानुभूति का विषय नहीं रह गया ।

आधुनिक स्त्री की स्थितियाँ एक ओर अधिकाधिक जटिल होती रही है । फिर भी वहीं उसके लेखन का इतिहास वस्तुतः उसके परिवेश और परिस्थितियों के साथ बदलते हुए संबंधों का, उसके अपने बदले हुए रूख और रवैया का इतिहास ही ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों से ऊपर उठकर जिस अनुपात में वह अपनी नियति को अपने हाथ में लेती गई है, उसी अनुपात में भावुकता के विरुध्द विवेक का दखल उसके लेखन में बढ़ता गया । उसके लेखन के इतिहास का हर अगला मोड़ विवेक के इसी दखल का अगला कदम है । १९५० के बाद की परिस्थितियाँ पिछले दशक से काफी परिविर्तित हुई । इस परिवर्तन का कारण लेखिकाओं की चेतना ही है । जीवन का स्थितियाँ जगत में प्रवेश पा चुका है । इसीलिए कामविश के साथ सृजन काम दोहराया जाता है ।

कंचन लता सब्बरवाल के उपन्यासों में प्रेम का स्वरूप रोमांटिक बोध लिये हुए है इन्होंने नारी की भावुकता एवं कुंठाओं का चित्रण किया है पात्रों और स्थितियों को एक दूसरे की तुलना में रखकर बिना स्वयं कुछ कहे ही एक को दूसरे पर टिप्पणी कर देने का कौशल्य अपनाया गया । विषयों के चुनाव में विविधता है ।

रजनी पणिकर ने अपनी रचनाओं में कामकाजी नारी का चित्रण किया है । प्रेम संबंध और नारी के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की ओर उनकी दृष्टि अधिक रही । इनके उपन्यासों में ''ठोकर, पानी की दीवार, प्यासे बादल, काली लड़की, सोनाली दी'' आदि प्रमुख है ।

शिवानी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवादा, मन्नू भंडारी आदि लेखिकाओं ने लग-भग चार दशकों तक लेखन में सक्रिय बनी रही है ।

कृष्णा सोबती ने कई लघु उपन्यासिकाओं और बृहत उपन्यास 'जिन्दगीनामा' के द्वारा अपेक्ष कृत बडे पैमाने पर ही अपना कैनवास चुना और बखू भी निभाया है । यही नहीं 'मित्रा मारजानी' आपकी सृजनात्मक साहस का प्रमाण है ।

स्त्री के संपूर्ण भाव संबंधों की समस्याओं को लेकर लिखे गये उपन्यासों में मन्नू भंडारी का

'आपकी बंटी', 'सूरज मुखी अंधेरे' प्रमुख है ।

मृदुला गर्ग ने पति - पत्नी के बीच बनते - बिगड़ते रिश्तों को बारीकी से चित्रित किया । इन्होंने अपने 'उसके हिस्से की धूप, चित्तकोबरा, वंशज, मैं और मैं' आदि उपन्यासों से हिन्दी उपन्यास भंडार को समृध्द किया ।

ममता कालिया न कुँआरे पन की धारणा की पति - पत्नि के बीच उत्पन्न संदेह और पारिवारिक विघटन की समस्या लेकर उपन्यास लिखें । बेघर, प्रेम कहानी नरक - दर - नरद आदि इनके उपन्यासों में प्रमुख है ।

दीप्ति खंडेलवाल के उपन्यासों में संवेदना और गहराई का मर्मस्पर्शी चित्रण दिखाई देता है । यही नहीं स्त्री पुरुष के विकृत व विषम संबंद, परिवारो का बिखराव, नारी के आंतरिक उत्पीड़न और विवशता भी आपके उपन्यासों में दिखाई देती है आपके उपन्यासों में प्रिया, वह तीसरा, कोहरे आदि प्रमुख है ।

मुस्लिम समाज की महिलाओं का चित्रण 'नासिरा शर्मा' के उपन्यासों की विशेषता है । यही नहीं नारी का स्वाभिमान, पुरुष का शोषण, देश की सांप्रदायिक समस्याएँ भी इनके उपन्यासों में चित्रित है आपके उपन्यासों में जिंदा मुहावरे, श्यामिली आदि प्रमुख है ।

इनके अलवा मालती जोशी, मंजुल भगत, कुसुम अंसल, कृष्ण अग्निहोत्री, सूर्यबाला, निरूपमा सेवती, चंद्रकांता आदि महिला उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों से हिन्दी उपन्यास साहित्य के भंडार को समृध्द किया ।

इन सब के अलग उपन्यास के क्षेत्र में राजी सेठ का प्रवेश आधुनिकता को लेकर हुआ। नारी मनोविज्ञान, नारी जीवन में व्याप्त अकेलापन, विसंगति, शून्यता बोध आदि को प्रकाश में लाना ही आपका लक्ष्य रहा ।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महिला लेखिकाओं ने परिचित निजी दायरों को नवीन दृष्टि से देखने का प्रयत्न किया । अंतर्जगत और बहिर्जगत की ओर अधिक दृढ़ता से अग्रसर होती दिखाई दे रही है । महिला लेखिकाओं के योगदान से हिन्दी उपन्यास साहित्य को नई दिशा मिली।

***